मेरे को तेरे में परिवर्तन कर बेफिक्र बादशाह बनो, बाप की मोहब्बत और सेवा में मन को इतना बिजी कर दो जो व्यर्थ आने की मार्जिन न रहे

आज बापदादा चारों ओर के अपने बेफिक्र बादशाहों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा सवेरे से उठ बेफिक्र स्थिति में स्थित हो हर कर्म करता है। हर एक बच्चे को अनुभव है कि यह बेफिक्र बादशाह की जीवन बादशाही भी और बेफिक्र भी, कितनी प्यारी लगती है क्योंकि आप सभी ने बाप को फिक्र देकरके फखुर ले लिया है। फखुर भी अविनाशी फखुर ले लिया है। हर एक अनुभव करते हैं कि यह बेफिक्र जीवन कितनी प्यारी है। दिनरात कोई भी बात का फिक्र नहीं लेकिन फखुर है। जानते हो कि यह बेफिक्र रहने की जीवन बाप ने इस एक जन्म के लिए नहीं लेकिन अनेक जन्मों के लिए बेफिक्र बादशाह बना दिया। अभी अनुभव करते हो बेफिक्र जीवन अगर है तो सदा मस्तक में दिव्य ज्योति चमकती रहती है। और अगर फिकर है तो माथे पर अनेक प्रकार के दु:खों का टोकरा भरा हुआ होता है। यह बेफिक्र जीवन की विधि बहुत सहज है – जो भी हद का मेरा-मेरा है उसको तेरा कर दिया। मेरा और तेरा में एक मात्रा का ही फर्क है। मे और ते। लेकिन मेरे को तेरा करने से जीवन कितनी खुशनुमा बन जाती है। बन गई है ना! कांध हिलाओ, बन गई! बेफिक्र जीवन बन गई! क्योंकि फिकर वाली जीवन का आधार है व्यर्थ संकल्प। तो अभी बापदादा हर बच्चे से यही चाहता है कि हर बच्चे के अन्दर व्यर्थ संकल्प का निशान भी नहीं रहे क्योंकि जब मेरे को तेरे में बदल दिया तो आप क्या हो गये? आप हो गये बेफिक्र बादशाह और यह बेफिक्र बादशाह की जीवन कितनी प्यारी है। हर कर्म करते बेफिक्र बादशाह। कोई फिक्र नहीं क्यों, क्या, कैसे, कब तक... यह सब समाप्त हो गये। बापदादा आज इस सीजन के लास्ट दिन यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा व्यर्थ को मेरे के बदले तेरा कर दे। बाप आपेही भस्म कर देंगे। आप सिर्फ एक मात्रा का अन्तर करो, मंज़ूर है! हो सकता है? अगर हो सकता है तो हाथ उठाओ। बहुत अच्छा क्योंकि यह 5-6 मास आप सभी को विश्व के आगे दु:खी आत्माओं को पावरफुल वृत्ति द्वारा सुख शान्ति की किरणें देनी हैं। इसी में ही अपना मन बिजी रखना है। व्यर्थ संकल्प भी किसमें आते हैं? मन में आते हैं ना! तो बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बेफिक्र बादशाह बच्चा अपने मन को अर्थात् वृत्ति को इतना बिजी रखे जो व्यर्थ को आने की मार्जिन ही नहीं रहे। मेहनत नहीं करनी पड़े लेकिन बाप के मोहब्बत में इतना बिजी रहो, वृत्ति की सेवा में इतना मन को बिजी रखो जो युद्ध भी नहीं करनी पड़े। कई बच्चे कहते हैं चाहते नहीं हैं लेकिन आ जाते हैं। इसको क्या कहेंगे? कि मन को बाप के प्यार और सेवा में बिजी नहीं रखा। सभी से पूछते हैं कि आपका प्यार बाप से कितना है? तो क्या कहते? बेहद है। तो जिससे प्यार होता है उसका कहना मानना कोई मुश्किल नहीं होता। तो आप सभी का बाप से अटूट प्यार है ना! कि कभी-कभी है? सदा है या कभी-कभी है? जो कहते हैं सदा प्यार है वह हाथ उठाओ। सदा प्यार है, देखो सोचो, सदा प्यार है तो बाप का कहना और बच्चे का करना। यह तो जानते हो ना!

तो अभी इस सीजन में बापदादा बच्चों को यही दृढ़ संकल्प कराने चाहते हैं, तैयार हो ना! कांध हिलाओ। तैयार हो दृढ़ संकल्प करने के लिए? पीछे वाले तैयार हैं? मातायें भी तैयार हैं? पाण्डव भी तैयार हैं? अच्छा हाथ उठाओ। इसमें दो-दो हाथ उठाओ। हाथ उठाते हो तो बापदादा को खुश तो कर देते हो। अभी जैसे यह हाथ उठाया ऐसे मन का हाथ उठाओ। कभी भी व्यर्थ संकल्प को आने नहीं देंगे। उनका काम है आना, आपका काम क्या है? समाप्त कर देना। तो इस सीजन में बापदादा ने पहले भी कहा है कि दो बातों का ध्यान रखना है एक तो संकल्प, दूसरा समय। जानते हो आप, इस संगम का समय एक-एक मिनट का कनेक्शन 21 जन्म के साथ है। और इस समय बापदादा का बच्चों से, बच्चों का बाप से प्यार है। तो संगम समय का एक सेकण्ड, सेकण्ड नहीं है क्योंकि 21 जन्मों का कनेक्शन है। अगर अब नहीं समय को बचाया तो बाप से जो प्यार है और हर एक चाहता है कि बाप के साथ अब भी रहें, साथ भी चलें। अपने घर लौटना है ना अभी। तो घर में भी साथ में चलें और फिर राज्य में भी बापदादा के साथ विशेष ब्रह्मा बाबा के साथ राजधानी में नजदीक साथ में आयें इसलिए ब्रह्मा बाप तो फरिश्ता रूप में है और आपको साथ में चलना है तो क्या करना पड़े? फरिश्ता बनना पड़े ना! फरिश्ता बनेंगे! बनना ही है ना!

बाप ब्रह्मा के हाथ में हाथ देके साथ चलना है, तो हाथ क्या है? फरिश्ते को स्थूल हाथ तो हैं नहीं। ब्रह्मा बाप का हाथ क्या है? श्रीमत। तो बापदादा की यही श्रीमत है कि अब बेफिक्र बादशाह बन सदा जैसे आपकी जगदम्बा ने पुरुषार्थ किया, बाप का कहना और जगत अम्बा का करना, ऐसे जगत अम्बा को फॉलो करो। समय और संकल्प को सफल करना ही है। व्यर्थ नहीं जाये। सुनाया ना – एक-एक संकल्प का 21 जन्म से कनेक्शन है। तो बापदादा यही चाहते हैं कि सदा मन को बिजी रखो। चाहे मुरली के मनन में, चाहे सेवा में, हर समय बिजी रहो। अपना चार्ट बनाओ, हर समय बीच-बीच में जो बापदादा ने ड्रिल सुनाई है भिन्न-

भिन्न, जानते हो ना अशरीरी बनने की ड्रिल। अपने तीन स्वरूपों के स्मृति की ड्रिल, जानते हो ना! जैसे बाप के तीन रूप हैं ऐसे आपके भी तीन रूप हैं। ब्राह्मण, फरिश्ता और देवता, इन तीनों रूपों में ड्रिल द्वारा अपने मन को बिजी रखो इसलिए महामन्त्र क्या है? मनमनाभव।

बाकी बापदादा का हर बच्चे से बहुत-बहुत प्यार है इसलिए बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चा विजयी भव के वरदानी बनें। सुनाया था ना कि कई बच्चे सोचते हैं हम विजयी तो बनें लेकिन माला तो 108 की है, तो विजयी बनके माला में तो आ नहीं सकेंगे लेकिन बापदादा का इतना प्यार है कि आप विजयी बनो तो बापदादा माला में भी लड़ें (लड़ियां) लगा देगा। आप सिर्फ विजयी बनो। तो क्या संकल्प है? विजयी बनना ही है ना! कि सिर्फ 108 विजयी बनेंगे? नहीं। बाप का हर बच्चा विजयी है। बापदादा हर बच्चे के मस्तक में क्या देख रहे हैं? विजय का तिलक क्योंकि साधारण रूप में बाप को पहचान लिया है ना! चाहे लास्ट बच्चा है, पुरुषार्थ में ढीला है लेकिन उसमें यह विशेषता है कि साधारण रूप में आये हुए बाप को पहचान मेरा बाबा तो कहता इसलिए हर एक बच्चे को हिम्मत रख विजय प्राप्त करनी ही है। सिर्फ क्या करना है? कोई मेहनत की बात नहीं है, प्यार की बात है। बापदादा से प्यार है, परिवार से प्यार है तो प्यार वाले से अलग नहीं रहा जाता है। तो ब्रह्मा बाबा से कितना प्यार है? जो समझते हैं कि ब्रह्मा बाप से, शिव बाप से हमारा अटूट प्यार है वह हाथ उठाओ। अटूट, अटूट? बहुत अच्छा। तो दूसरी सीजन में बापदादा क्या देखने चाहता है? जानते तो हो। आपको 5-6 मास मिलना है व्यर्थ से समर्थ संकल्प करने में।

तो बोलो, मधुबन वाले उठो, चाहे नीचे चाहे ऊपर। बहुत हैं। तो मधुबन वाले बापदादा को प्यारे हैं। ऐसे नहीं दूसरे प्यारे नहीं हैं। वह भी प्यारे हैं लेकिन मधुबन वालों से एक बात का विशेष प्यार है, वह क्या? मन्सा में याद तो सब करते हैं। योगी तू आत्मायें तो सभी हैं, ज्ञानी आत्मायें भी सभी हैं लेकिन मधुबन वालों को अपना भविष्य सहज बनाने की एक लिफ्ट है। वह लिफ्ट क्या है? जो भी मधुबन में आते हैं, उनकी सेवा के निमित्त हैं। जैसे खाना बनाने वाले जो भी कोई ड्युटी करने वाले हैं। बापदादा तो कहते हैं कोई झाड़ू लगाने वाला भी है ना, वह भी भाग्यवान है, क्यों? जो भी आते हैं वह यह वायुमण्डल देख आपके दिल के प्यार की शक्ति देख खुश हो जाते हैं। चाहे खाना बनाने वाला, चाहे कोई भी ड्युटी वाला है लेकिन मधुबन वालों को चांस है। मधुबन का प्यार और शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने का, इसलिए बापदादा मधुबन वालों को बहुत-बहुत मुबारक दे रहे हैं कि यह सीजन समाप्त की और आगे के लिए भी अपने मन में आत्माओं को सन्तुष्ट करने में और शक्तिशाली अनुभव कराने में निमित्त बनते रहेंगे इसलिए सब ताली बजाओ मधुबन वालों के लिए। अच्छा।

आज अमृतवेले बापदादा को मधुबन के सेवाधारी सामने आये। हर एक से बापदादा वतन में भी मिले और खास आपको पहले भी बताया है कि चार बजे के समय आपकी एडवांस में गई हुई विशेष दादियां जरूर आती हैं। तो आज भी विशेष दादियाँ और विशेष भाई पहुंचे थे। उन्होंने खास मधुबन वालों को इमर्ज करने के लिए कहा। विशेष दीदी और दादी दोनों ने और विशेष भाईयों ने भी मधुबन वालों को याद किया। और दादी ने विशेष याद दी और साथ में वतन का आम, जानते हो ना वतन का फल कितना बढ़िया होता है, लाठी नहीं लगानी होती है, जो फल चाहिए वह आप हाथ से ही ले सकते हो। तो दादी ने कहा आज मधुबन वालों से आम की पिकनिक करते हैं। दूसरी दादियां तो साथ में थी और विशेष भाई भी थे। तो बापदादा ने कहा उन्हों से पूछो कि मधुबन के लिए आपको मन में क्या आता है? तो दादी क्या बोली? पता है, जानते तो हो, दादी को तो जानते हैं ना! दादी कहती थी मेरी यह अभी तक भी दिल है कि हर एक मधुबन वाला चाहे पुरुषार्थ में कोई भी कमी अभी रह गई है, उसका तो पुरुषार्थ करना है लेकिन मैं एक बात चाहती हूँ मधुबन वालों से। वह क्या चाहती हूँ? एक-एक मधुबनवासी बाप समान बन जाये। वैसे तो सभी को बनना है लेकिन मधुबन विशेष है, मधुबन वालों को दादी से प्यार था, यह दादी कहती थी मुझे पता है। तो प्यार के रिटर्न में मैं यही चाहती हूँ कि जैसे मम्मा ने लक्ष्य रखा बाबा ने कहा मम्मा ने किया, यह तो मधुबन वाले जानते ही हैं। ऐसे ही अमृतवेले से लेके रात तक हर एक मधुबन वाले, अगर बाबा के साथ मेरे से भी प्यार है, दादियों से भी प्यार है, तो जैसे मम्मा ने बाप की हर राय जीवन में लाई, ऐसे हमने भी लाई। तो अगर दादियों से प्यार है, तो यही करके दिखायें, सवेरे से रात तक ऐसा कोई संकल्प, बोल, कर्म नहीं लावें जो दादियों को या बाप को या किसी को भी पसन्द नहीं हो।

बाकी टीचर्स को देख बापदादा खुश होते हैं क्योंकि बाप समान सीट का भाग्य मिला है। बाप की मुरली सुनाने की सीट मिली है। बाप हमेशा टीचर्स को साथी कहते हैं। अभी टीचर्स के लिए बापदादा एक बात चाहते हैं। सुनायें क्या? बापदादा चाहते हैं कि हर एक टीचर चेहरे से ब्रह्मा बाप समान ऐसे खुशनुमा नज़र आये। अन्दर पुरुषार्थ होगा भी लेकिन वह आपकी सूरत से नज़र आवे,

बाप प्रत्यक्ष हो। कोई को भी देखें तो आपमें बाप की चमक दिखाई दे। ऐसे चेहरे से सेवा करने वाली बाप को प्रत्यक्ष कर ही लेंगी। अब समय आ गया है, बाप को अपने चेहरे से प्रत्यक्ष करने का। तो टीचर्स को सदा मेरा बाबा तो स्वत: ही याद है। अभी बाप को चेहरे से प्रत्यक्ष करना है। कर सकते हैं ना! कर सकते हैं तो करो। देखो, अभी तक की रिजल्ट में क्या सभी कहते हैं! ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं, बाप प्रत्यक्ष नहीं है। वह अभी भी गुप्त है। तो अभी समय समीप आ रहा है, तो आप द्वारा चाहे निमित्त टीचर्स हैं या कोई भी बच्चा है, अभी बाप को प्रत्यक्ष करो। ब्रह्माकुमारियां अच्छा कार्य कर रही हैं, यह तो हो गया। यहाँ तक पहुंच गये हो। लेकिन अभी यह प्रत्यक्ष करो कि स्वयं परमात्मा ब्रह्मा तन में प्रत्यक्ष हो ब्रह्माकुमारियों को ऐसे योग्य बना रहे हैं। अभी यह प्वाइंट रही हुई है। गीत तो गाते हैं मेरा बाबा आ गया, लेकिन अभी अन्य आत्माओं के अन्दर यह प्रत्यक्ष हो कि भगवान स्वयं प्रत्यक्ष हो यह कार्य बहिनों द्वारा या भाईयों द्वारा करा रहे हैं। यह प्रत्यक्षता करनी है ना! कब करेंगे? अब। क्या कहेंगे? अब ना! (अभी शुरू करेंगे, अगली सीजन तक हो जायेगा) आप सभी साथ में हो, अगली सीजन तक हो जायेगा? हाथ उठाओ जो समझते हैं! थोड़े हाथ उठा रहे हैं। जो हाथ नहीं उठा रहे हैं वह देखेंगे और आप करेंगे! टीचर्स ने तो संकल्प किया है ना! क्योंकि देख रहे हो बापदादा तो कहते ही हैं कि सब अचानक होना है। कोई बच्चे समझते हैं अचानक, अचानक भी बहुत समय हो गया है। अभी होना चाहिए। लेकिन अचानक तब हो जब बच्चे भी बाप समान बन जायें। आपकी सूरत मूरत एक-एक बोल बाप को प्रत्यक्ष करे। हो जाना तो है ही। होना ही है अभी सिर्फ निमित्त बनना है। अभी अगली सीजन में क्या करेंगे? एक तो अपने को बाप समान बनायेंगे। जो भी कमी रह गई है, उसको सम्पन्न करेंगे। और बापदादा को खुशी है किस बात की? तो बच्चों ने जैसे अभी छोटे मोटे सभी सेन्टर ने वाणी द्वारा प्रसिद्ध किया कि हम क्या कार्य कर रहे हैं। वायुमण्डल को चेंज किया है। इसकी बापदादा मुबारक दे रहे हैं। जिन्होंने जहाँ भी प्रोग्राम्स किये हैं, अच्छे किये हैं, और सभी के अटेन्शन में भी आया है कि ब्रह्माकुमारियां सचमुच गुप्त रूप में अपने कार्य का समय 75 वर्ष पूरा किया है। अभी यह कहें कि ब्रह्माकुमारियों का भगवान बाबा आ गया है। लक्ष्य है ना! तो अगले सीजन तक यह कार्य आरम्भ हो जाना चाहिए। इसका प्रत्यक्ष प्रोग्राम बनाना। प्रोग्राम बनाते हैं ना, मीटिंग करते हैं ना! तो मीटिंग में यह प्रोग्राम बनाओ कि अभी सब बच्चों को पता तो पड़े कि वर्सा देने वाला बाप आ गया। वंचित नहीं रह जाएं। बाप को तो बच्चों के दु:ख को देख बहुत तरस पड़ता है। जब दु:ख में चिल्लाते हैं, बाप को तरस पड़ता है। आप देव और देवियों को भी बहुत पुकारते हैं। तो अगली सीजन में एक तो व्यर्थ का नामनिशान नहीं, मंजूर है? मंजूर है! दिल का हाथ उठाओ। दिल का हाथ उठाना। व्यर्थ होता क्या है, यह मालूम ही गुम हो जाए। जैसे स्वर्ग की शहजादियां आती हैं ना तो उनको दु:ख और अशान्ति का पता ही नहीं है, कहते हैं क्या कहते हैं, यह क्या होता है! ऐसे ही ब्राह्मण परिवार में व्यर्थ का पता ही न हो, व्यर्थ होता क्या है। स्वचिंतन, स्वचिंतक। अच्छा।

सभी चारों ओर के बच्चों को बापदादा का दिल का यादप्यार और साथ-साथ बाप हर एक बच्चे को अपने स्वमान के नशे में निश्चय में देख हर्षित होते हैं, कभी भी स्वमान को नहीं छोड़ना। स्वमानधारी अर्थात् सदा सर्व प्राप्तिवान, स्वमान की लिस्ट बड़ी लम्बी है, रोज़ एक-एक स्वमान स्मृति में रख स्वरूप में लाते तीव्र पुरुषार्थी बन आगे बढ़ते चलो। बापदादा को दिल में बिठाके और अपने को बापदादा के दिल में बिठाके निर्भय होके मास्टर सर्वशक्तिमान बन चलते रहो, उड़ते रहो और उड़ाते रहो। ओम् शान्ति।

वरदान:- सेवा की स्टेज पर समाने की शक्ति द्वारा सफलता मूर्त बनने वाले मास्टर सागर भव

जब सेवा की स्टेज पर आते हो तो अनेक प्रकार की बातें सामने आती हैं, उन बातों को स्वयं में समा लो तो सफलतामूर्त बन जायेंगे। समाना अर्थात् संकल्प रूप में भी किसी की व्यक्त बातों और भाव का आंशिक रूप समाया हुआ न हो। अकल्याणकारी बोल कल्याण की भावना में ऐसे बदल दो जैसे अकल्याण का बोल था ही नहीं। अवगुण को गुण में, निंदा को स्तुति में बदल दो – तब कहेंगे मास्टर सागर।

स्लोगन:- विस्तार को न देख सार को देखने वा स्वयं में समाने वाले ही तीव्र पुरुषार्थी हैं।

ये अव्यक्त इशारे - ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

जैसे आपकी रचना कछुआ सेकेण्ड में सब अंग समेट लेता है। समेटने की शक्ति रचना में भी है। आप मास्टर रचता समेटने की शक्ति के आधार से सेकेण्ड में सर्व संकल्पों को समाकर एक संकल्प में सेकेण्ड में स्थित हो जाओ। जब सर्व कर्मेन्द्रियों के कर्म की स्मृति से परे एक ही आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायेंगे तब कर्मातीत अर्थातृ सम्पन्न स्थिति का अनुभव होगा।